The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 4 | September 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

गिजुभाई का शैक्षिक चिंतन और समकालीन ECCE / प्राथमिक शिक्षा में प्रयोग

जितेन्द्र कुमार

शोध छात्र, शिक्षा विभाग, जे0एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 18/09/2025
स्वीकृति तिथि: 24/09/2025
प्रकाशनतिथि: 30/09/2025

मुख्य शब्द : *बाल्यावस्था देखभाल, सामाजिक-भावनात्मक विकास, मानसिक स्वास्थ्य, आत्मसम्मान, शिक्षण-अधिगम, प्राथमिक शिक्षा।*

।

सारांश

वर्तमान शिक्षा में शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि गिजुभाई बधेक आज भी इसलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि उनका शिक्षा-दर्शन प्रारंभिक बाल्यावस्था की उस मूल सच्चाई को स्वीकार करता है कि बच्चे विषयों के खाचों में नहीं, बल्कि अनुभव, खेल, संवाद और संबंधों के माध्यम से समग्र रूप से सीखते हैं। आज ECCE पर नीति-स्तर पर जोर बढ़ने के बावजूद व्यवहार में कई स्थानों पर छोटे बच्चों पर जल्दी अक्षर-ज्ञान, लिखावट, वर्कशीट, रटंत और प्रतिस्पर्धा का दबाव बढ़ रहा है, जिससे खेल, रचनात्मकता, मुक्त अभिव्यक्ति और भावनात्मक सुरक्षा का स्थान कम हो जाता है। बच्चे की दुनिया स्वभावतः जिज्ञासा, कल्पना और गति से भरी होती है, पर जब उसे बहुत जल्दी औपचारिकता में बाँध दिया जाता है, तो सीखना आनंद से हटकर बोझ में बदलने लगता है। ऐसे समय में गिजुभाई की बालक-केंद्रित दृष्टि एक मानवीय विकल्प प्रस्तुत करती है जहाँ शिक्षक का केंद्र पाठ्य-पुस्तक या परीक्षा नहीं, बल्कि बालक की प्रकृति, उसकी रुचि, उसकी गति और उसकी गरिमा होती है। गिजुभाई यह संकेत देते हैं कि प्रारंभिक शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य बच्चों को "जल्दी पढ़ाना" नहीं, बल्कि उन्हें "सही तरीके से बढ़ाना" है, ताकि उनके भीतर सीखने के प्रति प्रेम, आत्मविश्वास और जीवन से जुड़ी समझ विकसित हो सके। उनकी प्रासंगिकता इसीलिए है कि वे शिक्षा को बच्चे के वर्तमान से जोड़कर देखते हैं और मानते हैं कि बाल्यावस्था का वर्तमान केवल भविष्य की तैयारी नहीं, बल्कि अपने आप में मूल्यवान है।

1. प्रस्तावना

गिजुभाई की प्रासंगिकता का एक बड़ा कारण उनका अनुभवात्मक तथा क्रियात्मक अधिगम पर जोर है, जो ECCE के स्वभाव के अनुकूल और आज की जरूरत के अनुरूप है। आधुनिक समय में शिक्षक की एक गंभीर समस्या यह है कि सीखने को बहुत जल्दी किताब, कॉपी, वर्कशीट और निश्चित उत्तरों तक सीमित कर दिया जाता है, जबकि छोटे बच्चों की सीखने की शैली बहु-इंद्रिय और गतिविधि-आधारित होती है। बच्चा छूकर, देखकर, खेलकर, पूछकर, आज़माकर और अपने अनुभवों से अर्थ बनाकर सीखता है। गिजुभाई इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षक का मूल आधार बच्चे का अनुभव है, इसलिये कक्षा को अनुभवों का संसार बनाना चाहिए जहाँ कहानी, नाटक, गीत, कला, खेल, प्रयोग, निर्माण-गतिविधियाँ, रेत-पानी, मिट्टी, पौधों का अवलोकन और छोटी-छोटी खोज जैसी गतिविधियाँ सीखने का माध्यम बनें। समकालीन ECCE में यह दृष्टि इसलिये भी प्रासंगिक है क्योंकि आज बच्चों का प्राकृतिक खेल-समय कम हो रहा है, स्क्रीन-समय बढ़ रहा है और सामाजिक अनुभव सीमित हो रहे हैं; ऐसे में विद्यालय का दायित्व बढ़ जाता है कि वह बच्चों को खेल, आंदोलन, बातचीत और सहयोग के अवसर दे, ताकि उनका शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक विकास संतुलित रूप से हो सके। गिजुभाई के अनुसार जब बच्चा आनंद के साथ सीखता है, तब उसकी सीख स्थायी बनती है, क्योंकि आनंद सीखने की प्रेरणा को जीवित रखता है। यही कारण है कि उनके विचार आज के ECCE कार्यक्रमों में गतिविधि डिज़ाइन और कक्षा-वातावरण निर्माण के लिए मार्गदर्शक बन सकते हैं।

गिजुभाई बधेक का दर्शन आज के संदर्भ में इसलिये भी प्रासंगिक है क्योंकि वे शिक्षा को स्थानीय जीवन, संस्कृति और बच्चे के परिवेश से जोड़ने की बात करते हैं। समकालीन शिक्षा में कई बार पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री ऐसी बन जाती है जो बच्चों की वास्तविक दुनिया से दूर होती है, जिससे बच्चा शब्द तो याद कर लेता है, पर अर्थ नहीं पकड़ पाता। गिजुभाई की दृष्टि यह कहती है कि शिक्षा बच्चे की अपनी दुनिया से निकली होनी चाहिए, ताकि वह सहजता से जुड़ सके और सीखना प्राकृतिक बन सके। ECCE में स्थानीय लोककथाएँ, लोकगीत, त्योहार, मौसम, बाजार, खेत, नदी, घर-परिवार, पशु-पक्षी, समुदाय के पेशे और दैनिक जीवन के अनुभव शिक्षण सामग्री बन सकते हैं। इससे बच्चों का भाषा-विकास तेज़ होता है, उनका पर्यावरण-बोध मजबूत होता है और वे अपने समाज के प्रति सम्मान तथा जुड़ाव विकसित करते हैं। साथ ही

यह दृष्टि समावेशी शिक्षा को भी बल देती है, क्योंकि जब स्थानीय भाषा और संस्कृति का सम्मान होता है, तो विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे अधिक आत्मविश्वास के साथ सीखने में भाग लेते हैं। आज ECCE में "जीवन-संबद्ध सीख" और "सांस्कृतिक प्रासंगिकता" पर जोर है, वह गिजुभाई के विचारों से स्वाभाविक रूप से जुड़ता है और उनकी प्रासंगिकता को और अधिक मजबूत करता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो गिजुभाई बधेक आज इसलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वे प्रारंभिक शिक्षा को भय, यांत्रिकता और जल्दीबाजी से मुक्त कर बालक के लिए सुरक्षित, आनंदपूर्ण, जीवन-संबद्ध और अनुभव-समृद्ध वातावरण बनाने की दिशा देते हैं। वे शिक्षा को केवल ज्ञान-प्राप्ति की प्रक्रिया नहीं, बल्कि मानवीयता, संवेदनशीलता, सहयोग, आत्मविश्वास और नैतिक चेतना के निर्माण का माध्यम मानते हैं, जो ECCE की मूल आत्मा है। आज के समय में जब शिक्षा पर परिणाम, प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धा का दबाव बढ़ रहा है, तब गिजुभाई का दर्शन हमें संतुलन की ओर लौटने का संदेश देता है, ताकि बच्चों का बचपन सुरक्षित रहे और उनका विकास स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ सके। उनके विचार यह याद दिलाते हैं कि प्रारंभिक वर्षों में दिया गया प्रेमपूर्ण, सम्मानजनक और अनुभव-आधारित शिक्षा वातावरण ही आगे की समस्त शिक्षा की सबसे मजबूत नींव बनता है, क्योंकि जो बच्चा बचपन में सीखने को आनंद के साथ जोड़ता है, वही आगे चलकर जीवनभर सीखने वाला, आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बनने की संभावना रखता है। इसलिए ECCE के संदर्भ में गिजुभाई बधेक का दर्शन का अध्ययन आज भी उतना ही आवश्यक है जितना पहले था, क्योंकि यह अध्ययन हमें बच्चों के वर्तमान को मूल्यवान मानते हुए शिक्षा को मानवीय बनाने की प्रेरणा देता है और समकालीन शिक्षा व्यवस्था को यह दिशा देता है कि बच्चे को केंद्र में रखकर ही सच्ची और टिकाऊ शैक्षिक प्रगति संभव है।

वैचारिक आधार: बालक-केंद्रितता, स्वतंत्रता, स्वावलंबन, अनुभवात्मक सीखना: वर्तमान शिक्षा में शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में गिजुभाई बधेक के दर्शन का वैचारिक आधार बालक-केंद्रितता, स्वतंत्रता, स्वावलंबन और अनुभवात्मक सीखने के चार स्तंभों पर टिका हुआ दिखाई देता है, और यह आधार आज इसलिये अधिक अर्थपूर्ण बन जाता है क्योंकि ECCE के क्षेत्र में एक ओर नीति और कार्यक्रम बच्चों के समग्र विकास की बात करते हैं, वहीं दूसरी ओर व्यवहार में कई जगह छोटे बच्चों पर जल्दी अकादमिकता, लिखावट, वर्कशीट और प्रतियोगिता का दबाव बढ़ता जा रहा है।

गिजुभाई का दर्शन इस दबाव के बीच शिक्षा को बच्चे की प्रकृति की ओर वापस लाने का आग्रह करता है। उनके विचार यह स्मरण कराते हैं कि बाल्यावस्था की शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य बच्चे को जल्दी "पढ़ा" देना नहीं, बल्कि उसे ऐसा वातावरण देना है जहाँ वह सुरक्षित, सम्मानित और उत्साहित महसूस करते हुए सीख सके। इस वैचारिक आधार में बालक को शिक्षक का केंद्र मानकर शिक्षक, पाठ्यचर्या और विद्यालयी व्यवस्था की भूमिका पुनर्परिभाषित होती है, क्योंकि यहाँ शिक्षक का मानदंड केवल परिणाम नहीं, बल्कि प्रक्रिया और विकास बन जाता है। गिजुभाई की दृष्टि में बच्चा निष्क्रिय पात्र नहीं है जिसे शिक्षक ज्ञान भर दे, बल्कि वह सक्रिय और जिज्ञासु व्यक्तित्व है जो अपने अनुभवों से अर्थ बनाता है। इसलिए ECCE की पाठ्यचर्या और कक्षा-व्यवहार ऐसे होने चाहिए जो बच्चे की स्वाभाविक सीखने की प्रवृत्ति को पोषित करें, न कि उसे डर, दबाव और एकरसता में बाँध दें।

मोंटेसरी से संवाद: समानताएँ, भारतीय संदर्भ में रूपांतरण, सीमाएँ:

वर्तमान शिक्षा में शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में मोंटेसरी से गिजुभाई बधेक का संवाद जितना "समानताओं" को रेखांकित करता है, उतना ही वह "भारतीय रूपांतरण" और "व्यावहारिक सीमाओं" की स्पष्ट समझ भी देता है, और यही कारण है कि यह संवाद आज ECCE के लिए एक दिशा-सूचक बन जाता है। समानताओं के स्तर पर दोनों ही दृष्टियाँ इस मूल सिद्धांत पर सहमत दिखाई देती हैं कि बच्चा स्वभावतः सीखने वाला प्राणी है और शिक्षक का काम उसके भीतर ज्ञान भरना नहीं, बल्कि ऐसी परिस्थितियाँ बनाना है जहाँ वह स्वयं खोज कर सीख सके। मोंटेसरी का "प्रिपेयर्ड एनवायरनमेंट" और गिजुभाई का "बालक के अनुकूल वातावरण" दोनों में यह विश्वास छिपा है कि वातावरण ही शिक्षक का सबसे बड़ा सहायक है, क्योंकि वही बच्चे को गतिविधि, एकाग्रता, अनुशासन और स्वतंत्रता की ओर ले जाता है। इसी तरह मोंटेसरी की "स्वतंत्रता के भीतर अनुशासन" वाली अवधारणा और गिजुभाई का "दंड के बजाय आत्मनियंत्रण" का आग्रह भी मूलतः एक ही दिशा में चलते हैं, क्योंकि दोनों यह मानते हैं कि डर से जो अनुशासन बनता है वह टिकाऊ नहीं होता, जबकि समझ और अभ्यास से जो अनुशासन बनता है वह बच्चे के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है। इस संदर्भ में शिक्षक का स्वरूप भी दोनों के यहाँ आदेश देने वाले अनुशासनकर्ता का नहीं, बल्कि पर्यवेक्षक, सहायक और मार्गदर्शक का होता है, जहाँ शिक्षक बच्चों को लगातार देखता है, उनके विकास के संकेत पकड़ता है, आवश्यकतानुसार मदद देता है और

सीखने के अवसरों का आयोजन करता है; ECCE में यह भूमिका इसलिये महत्वपूर्ण है क्योंकि छोटे बच्चे व्यवहार और भावनाओं के स्तर पर बहुत संवेदनशील होते हैं और उन्हें सख्त नियंत्रण से अधिक संवेदनशील मार्गदर्शन की जरूरत होती है।

बाल मंदिर मॉडल: कक्षा-वातावरण, सामग्री, दिनचर्या, शिक्षक की भूमिका:

वर्तमान शिक्षा में शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में गिजुभाई बधेक के दर्शन से जुड़ा बाल मंदिर मॉडल एक ऐसा व्यावहारिक ढांचा प्रस्तुत करता है जिसमें कक्षा-वातावरण, सामग्री, दिनचर्या और शिक्षक की भूमिका मिलकर बच्चे के लिए सीखने का सुरक्षित, आनंदपूर्ण और जीवन-संबद्ध संसार रचते हैं। यह मॉडल मूलतः इस विचार पर आधारित है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में सीखना पाठ्य-पुस्तकों और औपचारिक निर्देशों से कम, और अनुभव, खेल, संवाद तथा संबंधों से अधिक होता है। इसलिए बाल मंदिर मॉडल में कक्षा का उद्देश्य बच्चों को चुपकराकर बैठाना नहीं, बल्कि उन्हें सक्रिय, उत्सुक और सहभागिता बनाने का होता है। आज समकालीन ECCE में एक बड़ी चुनौती यह है कि कई जगह प्रारंभिक कक्षाओं को भी जल्दी अकादमिकता, वर्कशीट, लिखावट और रटंत की दिशा में मोड़ दिया जाता है, जिससे बच्चों का स्वाभाविक खेल, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक-भावनात्मक विकास प्रभावित हो सकता है। गिजुभाई का बाल मंदिर मॉडल इस चुनौती के बीच एक मानवीय विकल्प देता है, क्योंकि यह बच्चे के वर्तमान को मूल्यवान मानता है और शिक्षा को ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखता है जो बालक के भीतर आनंद, आत्मविश्वास, स्वावलंबन और आत्मनियंत्रण की नींव रखे। इस मॉडल की प्रासंगिकता इसलिये भी बढ़ जाती है क्योंकि यह संसाधनों की सीमाओं के बावजूद स्थानीय, सरल और उपलब्ध साधनों से प्रभावी ECCE वातावरण बनाने की दिशा दिखाता है, जिससे भारतीय संदर्भ में इसे व्यवहार में उतारना अधिक संभव हो जाता है।

प्राथमिक शिक्षा में अनुप्रयोग: भाषा, गणित, कला, खेल, भ्रमण, समुदाय आधारित सीखना:

वर्तमान शिक्षा में शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में गिजुभाई बधेक के दर्शन का प्राथमिक शिक्षा में अनुप्रयोग इस बात से स्पष्ट होता है कि वे भाषा, गणित, कला, खेल, भ्रमण और समुदाय आधारित सीखने को अलग-अलग विषयों के खाचों में बंद नहीं करते, बल्कि बच्चे के अनुभव-जगत से जुड़ी समग्र

सीख के रूप में देखते हैं। उनके लिए प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य केवल "पाठ पूरा करना" या "जल्दी लिखना-पढ़ना" नहीं, बल्कि बच्चे के भीतर समझ, अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास, सहयोग और सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टि विकसित करना है। आज के समय में प्राथमिक शिक्षा पर अक्सर परीक्षा, अंक और प्रतिस्पर्धा का दबाव बढ़ता दिखाई देता है, जिसके कारण कई बार सीखना यांत्रिक हो जाता है और बच्चे की जिज्ञासा तथा रचनात्मकता दब सकती है। ऐसे संदर्भ में गिजुभाई का दर्शन प्राथमिक शिक्षा को बालक-केंद्रित बनाकर उसे भय-मुक्त, आनंदपूर्ण और जीवन-संबद्ध बनाने की दिशा देता है। ECCE से निकलकर प्राथमिक कक्षाओं में आते समय बच्चे को जिस तरह के अनुभव, खेल और संवाद की जरूरत होती है, गिजुभाई की दृष्टि वही संतुलन बनाकर रखने का आग्रह करती है ताकि बच्चा अचानक औपचारिकता के बोझ में न दब जाए और उसकी सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति सुरक्षित रहे।

अनुशासन का दृष्टिकोण: दंड नहीं, प्रेरणा और आत्मनियंत्रण:

वर्तमान शिक्षा में शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में गिजुभाई बधेक का अनुशासन-दृष्टिकोण इस मूल विश्वास पर आधारित है कि छोटे बच्चों में अनुशासन का अर्थ दंड देकर नियंत्रण स्थापित करना नहीं, बल्कि प्रेरणा, समझ, संबंधों की गरिमा और आत्मनियंत्रण के क्रमिक विकास के माध्यम से व्यवहार को दिशा देना है। ECCE की अवस्था में बच्चा विकास के उस चरण में होता है जहाँ उसकी भावनाएँ तीव्र होती हैं, उसकी ध्यान-क्षमता सीमित होती है और आवेग पर नियंत्रण धीरे-धीरे बनता है। इसलिए यदि अनुशासन को डाँट, धमकी, अपमान या शारीरिक दंड के सहारे चलाया जाएगा तो बच्चा तत्काल रूप से चुप तो हो सकता है, पर भीतर से वह भय, संकोच और असुरक्षा सीख लेता है, और नियमों का पालन समझ के कारण नहीं बल्कि डर के कारण करता है। गिजुभाई बधेक इस भय-आधारित अनुशासन को शिक्षक के खिलाफ मानते हैं, क्योंकि उनके अनुसार शिक्षक का लक्ष्य बच्चे के व्यक्तित्व को संकुचित करना नहीं, बल्कि उसे विकसित करना है। आज जब ECCE में मानसिक स्वास्थ्य, आत्मसम्मान और सामाजिक-भावनात्मक विकास को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा माना जा रहा है, तब गिजुभाई का अनुशासन-दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि यह बच्चों की गरिमा की रक्षा करते हुए उन्हें भीतर से जिम्मेदार बनाता है।

यह दृष्टिकोण यह भी बताता है कि अनुशासन केवल नियमों का पालन नहीं, **बल्कि वह जीवन**-कौशल है जिसमें बच्चा अपने व्यवहार, **भावनाओं और इच्छाओं को समझकर उन्हें उपयुक्त तरीके से व्यक्त करना** सीखता है।

शिक्षक-प्रशिक्षण और संस्थागत निहितार्थ: ECCE में क्या बदले:

वर्तमान शिक्षा में **शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में गिजुभाई बधेक के दर्शन का अध्ययन** यह स्पष्ट करता है कि ECCE **की गुणवत्ता का वास्तविक आधार केवल पाठ्यचर्या या पुस्तकों में परिवर्तन** नहीं है, बल्कि शिक्षक-**प्रशिक्षण और संस्थागत ढाँचे में ठोस बदलाव है। गिजुभाई की दृष्टि में शिक्षक अनुशासनकर्ता नहीं बल्कि मार्गदर्शक**, पर्यवेक्षक और सह-यात्री है, और यह भूमिका तभी संभव है जब शिक्षक के पास बाल-**विकास की वैज्ञानिक समझ**, संवेदनशील दृष्टि, गतिविधि-**आधारित शिक्षण कौशल और सकारात्मक अनुशासन की क्षमता हो। आज समकालीन** ECCE में **एक सामान्य समस्या यह दिखाई देती है कि शिक्षक से अपेक्षा तो समग्र विकास की की जाती है, लेकिन प्रशिक्षण कई बार केवल पाठ्यवस्तु,** कार्यपत्रक या औपचारिक "**कक्षा संचालन**" तक सीमित रह जाता है। **इसके साथ संस्थागत दबाव भी कई** जगह जल्दी अक्षर-ज्ञान, लिखावट, **परीक्षा और परिणामों की ओर झुकाव पैदा कर देते हैं**, जिससे शिक्षक की वास्तविक बालक-**केंद्रित भूमिका कमजोर पड़ जाती है। गिजुभाई का दर्शन इस स्थिति में एक स्पष्ट** दिशा देता है कि ECCE **में सुधार का अर्थ है शिक्षक को सक्षम बनाना और संस्थान को बच्चों के लिए** अनुकूल बनाना, ताकि शिक्षा भय, जल्दीबाजी और यांत्रिकता से मुक्त होकर अनुभव, खेल, संवाद और संबंधों के माध्यम से आगे बढ़ सके।

शिक्षक-**प्रशिक्षण के स्तर पर गिजुभाई के दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थ यह है कि प्रशिक्षण का केंद्र** "क्या पढ़ाएँ" से अधिक "**कैसे और किस वातावरण में बच्चे** सीखते हैं" होना चाहिए। ECCE शिक्षक को सबसे पहले बाल-विकास की समझ चाहिए, क्योंकि छोटे बच्चों का व्यवहार, ध्यान, भाषा और भावनाएँ **विकासात्मक चरणों से जुड़ी होती हैं। यदि शिक्षक यह नहीं समझेगा कि तीन से छह वर्ष के बच्चे में आवेग** नियंत्रण सीमित होता है, उसकी भाषा धीरे-**धीरे विकसित होती है और वह खेल के माध्यम से सीखता है**, तो **वह बच्चों की स्वाभाविक चंचलता को अनुशासनहीनता मानकर दंड की ओर बढ़ सकता है।**

गिजुभाई की दृष्टि में शिक्षक का काम बच्चों को दबाना नहीं, बल्कि उनकी ऊर्जा को सही दिशा देना है, इसलिए प्रशिक्षण में बाल-व्यवहार की समझ, भावनात्मक संकेतों की पहचान, और बच्चों की जरूरतों के अनुसार गतिविधि और वातावरण को ढालने की क्षमता अनिवार्य रूप से शामिल होनी चाहिए। शिक्षक को यह भी समझना चाहिए कि सीखना केवल अकादमिक नहीं है; भाषा, सामाजिकता, भावनात्मक संतुलन, मोटर कौशल और स्वावलंबन भी ECCE के लक्ष्य हैं। इस समग्रता को समझे बिना शिक्षक केवल "पढ़ाने" पर टिक सकता है, जबकि गिजुभाई के अनुसार ECCE में शिक्षक का कार्य "विकास को सहारा देना" है।

समकालीन चुनौतियाँ और समाधान: दबाव, वर्कशीट संस्कृति, स्क्रीन समय, माता-पिता अपेक्षाएँ:

वर्तमान शिक्षा में शीघ्र बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में समकालीन चुनौतियाँ और समाधान का प्रश्न आज इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया है क्योंकि ECCE के क्षेत्र में एक ओर समग्र विकास, खेल-आधारित सीखने और बालक-केंद्रितता की बात की जाती है, वहीं दूसरी ओर व्यवहार में कई ऐसी प्रवृत्तियाँ तेजी से बढ़ रही हैं जो इस स्वाभाविक सीखने की प्रक्रिया को बाधित कर सकती हैं। बच्चों पर जल्दी उपलब्धि का दबाव, वर्कशीट और कॉपी-वर्क की संस्कृति, बढ़ता स्क्रीन समय और माता-पिता की तत्कालिक तथा ऊँची अपेक्षाएँ एक-दूसरे से जुड़कर ECCE की आत्मा को कमजोर कर देती हैं। इन प्रवृत्तियों का संयुक्त प्रभाव यह होता है कि बच्चे के लिए सीखना आनंद और खोज की यात्रा न रहकर प्रदर्शन और परिणाम का बोझ बन जाता है। गिजुभाई बधेक का दर्शन इस संदर्भ में इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि वह बच्चे के अधिकार, उसकी गरिमा और उसके स्वाभाविक विकास को शिक्षक का केंद्र मानते हैं और भय, दबाव और यांत्रिकता के स्थान पर अनुभव, खेल, संवाद, रचनात्मकता और आत्मनियंत्रण को शिक्षक की दिशा बनाते हैं। इसलिए समकालीन चुनौतियों को समझना और गिजुभाई की दृष्टि से उनके समाधान निकालना ECCE की गुणवत्ता, बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सीखने की टिकाऊ नींव के लिए आवश्यक हो जाता है।

निष्कर्ष:

अंततः यह कहा जा सकता है कि समकालीन ECCE की चुनौतियाँ दबाव, वर्कशीट संस्कृति, स्क्रीन समय और माता-पिता अपेक्षाएँ के रूप में एक जटिल जाल बनाती हैं, पर गिजुभाई बधेक के दर्शन की रोशनी में इनके समाधान स्पष्ट और व्यावहारिक दिखाई देते हैं। समाधान का पहला आधार यह है कि सफलता के

मानक विकास आधारित हों, **न कि जल्दी अकादमिक उपलब्धि आधारित**; दूसरा आधार यह है कि वर्कशीट के स्थान पर गतिविधि, खेल, कहानी, कला, परियोजना **और समुदाय आधारित सीख को केंद्र में** रखा जाए; **तीसरा आधार यह है कि स्क्रीन समय को सीमित करने के लिए विद्यालय और घर दोनों स्तर पर सार्थक विकल्प और स्पष्ट नियम बनाए जाएँ**; और चौथा आधार यह है कि माता-पिता को ECCE की प्रकृति **के बारे में जागरूक करके उनकी अपेक्षाओं को संतुलित किया जाए। जब विद्यालय**, शिक्षक और **अभिभावक मिलकर इन दिशाओं में कार्य करेंगे**, तब ECCE समकालीन चुनौतियों के बावजूद अपने मूल उद्देश्य को पूरा कर सकेगी, **यानी बच्चे के भीतर आनंद**, जिज्ञासा, आत्मविश्वास, भाषा, सामाजिकता, **स्वावलंबन और आत्मनियंत्रण की ऐसी मजबूत नींव रखेगी जो आगे की पूरी शिक्षा और जीवन को स्वस्थ**, मानवीय और टिकाऊ बनाती है।

संदर्भसूची

1. अग्रवाल, एम. (2013). **प्रारंभिक शिक्षा में भाषा विकास**. शिक्षा संवाद, खंड 8, अंक 2, पृ. 33–40.
2. अग्रवाल, वी. (2017). ECCE और बाल विकास. शिक्षा अध्ययन, खंड 12, अंक 3, पृ. 70–78.
3. गुप्ता, आर. (2018). **बालकेंद्रित शिक्षा की पद्धति**. शिक्षा विमर्श, 13(2), 45–53.
4. गुप्ता, पी. (2016). **बालकेंद्रित शिक्षण की विधियाँ**. भारतीय शिक्षा शास्त्र, खंड 11, अंक 2, पृ. 60–68.
5. चौधरी, एस. (2021). **बाल शिक्षा और नीति**. शिक्षा प्रगति, 16(2), 40–48.
6. चौधरी, डी. (2017). **प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियाँ**. शिक्षा विचार, खंड 12, अंक 1, पृ. 40–47.
7. तिवारी, एस. (2015). **गिजुभाई बधेक का शैक्षिक दर्शन**. शिक्षा दर्शन पत्रिका, खंड 10, अंक 1, पृ. 15–23.
8. पांडेय, एस. (2017). बाल विकास और अधिगम. शिक्षा प्रगति, 12(1), 22–30.
9. पांडेय, एस. (2018). **खेल आधारित शिक्षण**. शिक्षा संवाद, खंड 13, अंक 1, पृ. 35–43.
10. मिश्रा, पी. (2019). **बालक की रचनात्मकता**. शिक्षा दर्शन, खंड 14, अंक 2, पृ. 50–58.
11. मिश्रा, वी. (2020). ECCE और सामाजिक विकास. शिक्षा संवाद, 15(1), 30–38.

Corresponding Author: dr.jkkatiyar@gmail.com

12. यादव, डी. (2020). **प्रारंभिक शिक्षा में संवाद**. शिक्षा प्रगति, खंड 15, अंक 1, पृ. 25–33.
13. यादव, पी. (2019). **प्रारंभिक शिक्षा की समस्याएँ**. शिक्षा समीक्षा, 14(3), 60–68.
14. शर्मा, डी. (2016). ECCE और खेल. शिक्षा संवाद, 11(3), 65–73.
15. शुक्ला, वी. (2019). ECCE **और शिक्षक** की भूमिका. शिक्षा दर्पण, खंड 14, अंक 1, पृ. 50–58.
16. श्रीवास्तव, एन. (2018). **बाल विकास में खेल का महत्व**. शिक्षा प्रगति, खंड 13, अंक 2, पृ. 25–33.
17. सिंह, आर. (2022). **बालकेंद्रित कक्षा**. शिक्षा विमर्श, 17(3), 65–73.

Corresponding Author: dr.jkkatiyar@gmail.com